>

Title: Regarding drought like situation in Nawada district, Bihar.

डॉ. भोला सिंह (नवादा): सभापति महोदय, मैं आसन के प्रति शुक्रगुजार हूं कि आपने हमारी जनता, जो हमारी प्रभु हैं, उनकी आराधना करने का अवसर दिया है। महोदय, नवादा जो बिहार में 22 लाख की आबादी का जिला है, वह क्रॉनिक सुखाड़ से पीड़ित है, लहुलुहान है। आसमान में बादल हैं, लेकिन उनमें पानी नहीं है। धरती है, लेकिन उसके नीचे पानी नहीं है। नदियां कई हैं, लेकिन एक बूंद के लिए तरसती हैं।

सभापति महोदय, 64 वर्षों के बाद भी हमारे ये प्रभु, जो हमारी महान जनता है, जीवित लाश बनी हुई है। न उद्योग हैं, न धंधे हैं, न रोजगार हैं, यहां तक कि पेयजल के लिए भी उनकी गर्भवती पत्नियों को चार-चार, पांच-पांच मील दूर तक जाना पड़ता है। गर्भवती नारी जब घड़े को लेकर पानी लेने के लिए जाती है, तो रास्ते में उसका गर्भपात हो जाता है और एक नया इंसान असमय धरा पर उतरता है।

सभापति महोदय, मैं आज इस बात को इसलिए कह रहा हूं, क्योंकि हमारे भारत का जो संविधान है, वह नश्वर का अनश्वर संघ है। केन्द्र की विशेष जिम्मेदारी है। संविधान केन्द्र को एक विशेष स्थान देता है। केन्द्र को वरीयता प्राप्त है। हम आज इस सदन में कहने के लिए आये हैं कि हमारी जो नदियां हैं-- आबका परसकरी नहर, ढाढर नहर, सूरी नहर, धमारजर नदी, इन सभी के पानी को रोककर, डैम बनाकर, बिजली निकालकर हम बिहार की एक नयी तस्वीर, आकृति गढ़ सकते थे, वह नहीं हुआ है।

सभापति महोदय : आप अपनी मांग रखिये।

â€¦(व्यवधान)

डॉ. भोला सिंह : सभापति महोदय, मैं जानता हूं कि आप कहेंगे कि डिमांड रखिये। मैं आसन के माध्यम से भारत सरकार के प्रधान मंत्री जी से आग्रह करता हूं कि नवादा का यह हिस्सा जो आज विकास के अभाव में आतंकवाद और उग्रवाद से लहुलुहान है, वह जातीय उन्माद के कारण 30 वर्षों तक जलता रहा, लहुलुहान होता रहा। महाभारत में जब युधिष्ठिर जंघा भर खून से लथपथ थे, तो उस समय युधिष्ठिर के भाई सहदेव ने कहा था कि भइया, आपका यह खून नदी के पानी से नहीं धोया जा सकता। गरीबों के आंसू से जो नदी बनेगी, उससे यह खून साफ होगा।

सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से प्रधान मंत्री जी से कहना चाहता हूं ...(व्यवधान)

सभापति महोदय : आप अपनी बात संक्षिप्त कीजिए।

â€¦(व्यवधान)

डॉ. भोला सिंह : नवादा के विकास के लिए, नवादा के पुनर्वास के लिए, नवादा को आगे बढ़ने के लिए जो 22 लाख लोग जीवित लाश हैं, वही मेरे प्रभु हैं। वे प्यासे हैं, भूखे हैं और अनवरत् आसमान की तरफ देखते हैं।

प्रधानमंत्री जी, हम आपसे आज सदन में आग्रह करते हैं, मेरे प्रभु जो आज इतने वर्षों से उदास पड़े हैं, खिन्न पड़े हैं, आप उन्हें स्नेह दें, उनकी योजना देकर पुनर्वासित करें और नवादा की जिन्दगी में एक नयी आकृति गढ़ने का प्रयास करें। इन्हीं तथ्यों की ओर मैं आपके माध्यम से सदन का ध्यान आकर्षित करता हूं।